

ध्यान से भावों पर नियंत्रण संभव: आचार्यश्री महाश्रमण

आमेट में प्रवचन, साधु-साध्वियों ने प्रस्तुत की कविताएं, आचार्यश्री आज करेंगे

सेलागुडा के लिए विहार

आमेट: 4 फरवरी

तेरापंथ धर्म संघ के ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने मन को परिभाषित करते हुए कहा कि यह बहुत चंचल है। व्यक्ति इस पर अंकुश रखने के लिए ध्यान करने का प्रयास करें, तभी मन में होने वाली अप्रिय क्रियाओं पर नियंत्रण संभव है। आचार्यश्री ने उक्त विचार यहां अहिंसा समवसरण में शनिवार को श्रावक-श्राविकाओं को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि मन में कितने ही विचार उमड़ते हैं और यह दिमाग में चलते रहते हैं। मन का स्वभाव ही कुछ ऐसा है कि उसमें भावों का ज्वार उमड़ता रहता है। जीवन में निरन्तर संयम, साधना नहीं होगी तो अनुशासन में विकारों की उत्पत्ति हो सकती है। मन में संयम का भाव और आज के भौतिकतावादी परिवेश से परिपूर्ण जीवन को त्यागने की क्षमता मनुष्य में हो तो उसे मोक्ष मार्ग की प्राप्ति अवश्य होती है, जिस मनुष्य के चित्त में निर्मल भाव नहीं हैं और जो वर्तमान जीवन के भौतिकता से भरे जीवन के सुख को छोड़ नहीं सकता। उसे मोक्ष मार्ग की प्राप्ति नहीं होती। इसके लिए मनुष्य को माया- मोह के परित्याग के साथ सांसारिक दलदल से दूर रहकर निर्मल भाव से ध्यान आराधना करनी होगी तभी उसका मानव जीवन सार्थक हो सकेगा। आचार्यश्री ने कहा कि वर्तमान परिवेश में मनुष्य को अपनी इंद्रियों पर संयम रखना होगा। यह संयमित नहीं होगी तो हमारा मन इधर-उधर भटकेगा और हम मूल पथ से दूर हो जाएंगे। हमारे विचार, आचार और व्यवहार अच्छे होने चाहिए। इससे मन में शुद्धता आएगी और समाज एवं स्वयं का विकास हो सकेगा। आज हमें स्पष्टवादी बनना भी आवश्यक हो गया है।

आचार्य ने श्रावक-श्राविकाओं से आह्वान किया कि वे नेक व अच्छे कर्म करने में विश्वास करें। मन ही मनुष्य के बंधन और कर्मों को उजागर करता है। जैसा भाव होगा, मनुष्य का कर्म भी उसी अनुरूप सामने आएगा। आत्मा की शुद्धि के लिए मनुष्य को धर्म, साधना, तपस्या और आराधना करने की जरूरत है। चित्त को धार्मिक बनाने की आवश्यकता है, ताकि मन विकारों से ग्रसित न हो। पाप कर्म करने की ओर ध्यान आकृष्ट न हो। स्वयं के जीवन में स्वार्थ का बोध आने से रोंके और परमार्थ की ओर जीवन को ले जाने के उपायों को अपनाने का श्रम करें। यदि जीवन में भौतिकता का प्रभाव होगा तो पाप पर नियंत्रण पाना संभव नहीं होगा। व्यक्ति को तप, ध्यान और साधना करते समय इस बात पर ध्यान देने की जरूरत है कि उसका मन विचलित न हो। सबसे ज्यादा गतिशील मन है। मन को साधने का अभ्यास होना चाहिए। मन नियंत्रित होने से क्रिया करते हुए भी साधना कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा प्रस्तुत किया गया

प्रेक्षाध्यान आत्मिक सुखों को पाने में योगदूत बन सकता है। प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों से हम मन, वचन, काया की प्रवृत्ति को संतुलित कर सकते हैं। अनावश्यक प्रवृत्ति से बचा जा सकता है। अनावश्यक प्रवृत्ति से बचना बहुत बड़ी साधना है। इस अवसर पर आयोजित कविता पाठ प्रतियोगिता के वरिष्ठ वर्ग में प्रथम मुनि कुमारश्रमण, द्वितीय मुनि अनुशासनकुमार व तृतीय साध्वी विधुतप्रज्ञा तथा कनिष्ठ वर्ग में प्रथम मुनि जितेन्द्रकुमार, द्वितीय मुनि मृदुकुमार और तृतीय मुनि महावीरकुमार रहे। निर्णायक मुनि सुखलाल और मुनि विजयकुमार थे। कविता पाठ के संन्दर्भ में आचार्यश्री ने कहा कि अपने भावों की प्रस्तुति देना भी एक कला है। गुरुदेव तुलसी कितना काव्य का निर्माण करते थे। कालूयशोविलास उनकी काव्य प्रतिभा का प्रमाण है, जो राजस्थानी में रचे हुए है। इस अवसर पर मुनि सुखलाल ने भी विचार व्यक्त किए।

## आचार्यश्री आज करेंगे विहार

आमेट: 4 फरवरी

आध्यात्म जगत के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण अपनी धवल सेना के साथ रविवार दोपहर 2.40 बजे आमेट से सेलागुडा के लिए विहार करेंगे। आचार्यश्री महाश्रमण मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के संयोजक धर्मचंद खाब्या ने बताया कि आचार्यश्री 6 फरवरी को कुंआथल, 7 को दौलाजी का खेडा, 8 को ननाणा, 9-10 को दिवेर, 11 को कितेला, 12 को चारभुजा, 13 को रीछेड, 14 को मजेरा, 15 को कांकरवा, 16 को कुंचोली, 17 को करदा, 18 को रावलिया खुर्द, 19 को गोगुन्दा, 20 को रावलियां कलां, 21 को नान्दे-नमा, 22 को पदराडा, 23 को सेमड, 24 को सायरा, 25 को मग्धा, 26 को रणकपुर, 27 को सादडी, 28 को मुण्डारा, 29 को रमणिया, 1 व 2 मार्च को रानी, 3 को बरकाणा, 4 को नाडोल, 5 को नीपलखुर्द, 6 को डेयलाना, 7 व 8 को मगरतलाव, 9 को पनोता, 10 को जोजावर, 11 को धनला, 12 व 13 को खिंवाडा, 14 व 15 को जाणुंदा, 16 को आउवा, 17 को बिठौडा, 18 को मारवाड जंक्शन, 19 को गादाणा, 20 व 21 को गुडा रामसिंह, 22 को राणावास, 23 से 25 तक सिरियारी, 26 को माण्डा, 27 को कंटालिया, 28 को मुसालिया, 29 को सोजतरोड, 30 से एक अप्रैल तक बगडी में प्रवास करेंगे। खाब्या ने बताया कि एक अप्रैल को सायं सियाट, 2 को सोजतसिटी(मरूधर केसरी धाम), 3 को बागावास, शाम को जाडन, 4 को रुपरजत विहार, 4 से 8 तक पाली, 9 को घुमटी, 10 को केरला, 11 को जैतपुरा, 12 को माण्डावास, 13 को गेलावास, 14 को मझल, 15 को करमावास, 16 को मेली, 17 को गढ सिवाना, 18 को नागणेची मंदिर, 19 को ब्रह्म धाम, 20- 21 को आसोतरा, 22 अप्रैल से 21 मई तक बालोतरा, 22 जानियाना, 23-24 को कानाना, 25 को जेठंतरी, 26 से 31 मई समदडी, एक जून को जेठन्तरी, 2-3 को पारलु, 4 को उमरलाई, 5 को रामीणमुंगडा, 6 से 27 जून पचपदरा, 28 को बीच में तथा 29 जून को बाडमेर जिले के जसोल में चातुर्मास के लिए प्रवेन करेंगे।

नोट: इस समाचार का फोटो आरकेबी 5450 के नाम से है।

सेवा को मिला सम्मान

व्यवस्था समिति ने कार्यकर्ताओं को सम्मान से नवाजा

आमेट: 4 फरवरी

आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में शुक्रवार रात को यहां अहिंसा समवसरण सभागार में आयोजित कार्यक्रम में व्यवस्था समिति की ओर से 21 दिन के मर्यादा महोत्सव की सफल क्रियान्विति में अपनी सहभागिता का निर्वाह करने वाले कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष कन्हैयालाल कच्छारा, व्यवस्था समिति संयोजक धर्मचंद खाब्या, स्वागताध्यक्ष :ांतिलाल बाफना, सह संयोजक सलील लोढा, कंवरलाल रांका, देवीलाल छाजेड, कार्यकारी अध्यक्ष महेन्द्र बोहरा, सभा मंत्री लाभचंद हिंगड आदि ने कार्यकर्ताओं और विभागीय अधिकारियों को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। अंत में गोगालाल रमे:ा चौधरी की ओर से संयोजक धर्मचंद खाब्या को महोत्सव की सफलता को लेकर अभिनंदन पत्र भेंट किया गया। इस अवसर पर पालिका अध्यक्ष कैला:ा मेवाडा, उपाध्यक्ष रतनसिंह राठौड, तहसीलदार िवकि:ान सोनी, थानाधिकारी दलपतसिंह राठौड, कार्यालय प्रभारी अरुण मिश्रा आदि का सम्मान किया गया।